राज कॉमिक्स विशेषांक

मूल्य 20.00 संख्या 236

शिकंजा

भौकाल

भोकाल शिकंजा

○ लेखक :- संजय गुप्ता ! ○ संपादक :- मनीष गुप्ता ! ○ चित्रांकन :- कदम स्टुडियो !

कुछ क्षणों बाद ही-

विश्वा को अग्नि समाधि में भेजने की तैयारी करो।

मृत्यु के भय ने उस हत्यारे के रोम-रोम को कंपा डाला

नहीं...

नहीं!

विश्वा को खींचकर लौह कवच में बंद कर दिया गया-

अब बस उस लौह कवच को अग्नि में उतारा जाना बाकी था-

लेकिन ऐसा हो पाता उससे पहले ही-

भड़ाक

कारागार की दीवार टूटने की आवाज ने सभी को चौंकाया-

और उस समय तो सभी को अपनी सांसें रुकती प्रतीत हुईं जब-

आह! कितना विशाल कीड़ा

य... यह तो मजबूत दीवारों को तोड़ता इधर ही आ रहा है।

भाले मारकर रोको इसे।

भाले मारे तो जरूर गए, लेकिन वे भाले उस कीड़े के विशाल शरीर से टकराकर छिटकने के सिवा कुछ न कर सके--

ओह! भालों ने तो उसके शरीर पर खरोंच भी नहीं डाली।

रोको उसे!...

...वह उस तरफ बढ़ रहा है।

...जिधर लौह कवच में...

...विस्वा बंद है।

मजबूत लौह कवच को मूंगफली की तरह फोड़कर...

...उस विशाल कीड़े ने उसमें से विश्वा को निकाल कर अपने विशाल हाथों में जकड़ लिया-

लेकिन विश्वा को लेकर वह वहां से चला जाता...

... उससे पहले ही-

विशालकाय कीड़ा लड़खड़ा गया।

लेकिन एक क्षण के लिए क्योंकि अगले क्षण ही-

ओफ्फ! बहुत ही शक्तिशाली है इसका प्रहार। एकदम किसी मस्त हाथी की टक्कर की तरह...

धड़ाक

...और उसकी तेजी है एकदम चीते जैसी। उसे रोकना होगा। नहीं तो वह दुष्ट विश्वा को लेकर यहां से भाग निकलेगा...

...और इस समय तो उसे तुरन्त ही रोकने का एक ही साधन है...

...यह मोटी रस्सी।

ओकाल तुरन्त ही रस्सी को लेकर उस पर आ कूदा-

अब देखता हूं तू कैसे भागेगा!

ओकाल ने फुर्ती से रस्सी को उसके इर्दगिर्द लपेटकर उसे बेबस कर दिया-

अब ठीक है। अब कुछ ही क्षणों में यहां पहुंचने वाली सैनिकों की टुकड़ी इसे अपने सिरों पर उठाकर...

और फिर-

...किसी खाई में फेंक आएगी।

ओह!

अचानक ओकाल ने सारी रस्सियों को कच्चे धागे की तरह टूटते देखा-

आश्चर्यचकित कर देने वाले दंग से उस विशालकाय कीड़े के शरीर से उसके हाथ अलग हुए...

...और स्तब्ध खड़े भोकाल के शरीर से जा लिपटे

ओह नहीं! मैं जिसे अभी तक हाड़मांस का विशाल कीड़ा समझ रहा था वह चलता-फिरता यांत्रिक पुतला निकला।

उसे रोकने के लिए एक बड़ी सैनिक टुकड़ी इधर ही बढ़ रही है।

सैनिकों की वह बड़ी टुकड़ी उस विशाल कीड़े को रोकने आई थी, लेकिन वह टुकड़ी कुछ कर पाती उससे पहले ही...

...आश्चर्य से फटी सभी की आंखों को वह कीड़ा जमीन में समाता दिखाई दिया-

ओह! नहीं!

ओफ्फ!

ओह! वह तेजी से घूमते हुए धरा में समाकर भाग रहा है। परन्तु मैं उसे रोकने के लिए कुछ नहीं कर सकता क्योंकि...

...मैं उसके द्वारा छोड़े गए इन हाथों में फंसा अपनी हड्डियों को टूटने से बचाने में व्यस्त हूं

...मेरे पास अब एक ही रास्ता बचा है कि मैं पुकारूं...

भोऽऽऽ काऽऽऽ लऽऽऽ
महागुरु भोकाल की शक्तियों को प्राप्त करके भोकाल ने ना सिर्फ स्वयं को उन हाथों से बचाया...
...बल्कि उनके परखच्चे भी उड़ा दिए-
इसी बीच यहां-
क... कौन हो तुम?
...और तुम मुझे अग्नि समाधि से बचाकर क्यों लाए हो?
अभी पता चल जाएगा तुम्हें...
...कि मैं कौन...

...हूं!
पि...पिताजी अ...आप!
...आपने इस यांत्रिक कीड़े के पुतले में बैठकर मुझे बचाया!
मैं भी कितना मूर्ख हूं मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था कि ये आप ही होंगे। क्योंकि सजीव सी लगने वाली यांत्रिक वस्तुओं को पूरे विश्व में मात्र आप ही अपने चमत्कारी औजारों से बना सकते हैं।
हां विश्वा। मैंने ही तुम्हें कारागार से छुड़ाने का अपराध किया है। परन्तु जानता है, मैंने ऐसा क्यों किया...
...हर समय तुझ जैसे राष्ट्रद्रोही की मृत्यु की कामना के लिए उठने वाले मेरे हाथों ने तुझे बचाने के लिए अपने चमत्कारी औजारों को क्यों उठाया?
उस देवी के कारण जिसे दुर्भाग्य ने तेरी पत्नी और मेरी पुत्रवधू बना डाला...
...उसने अपनी अन्तिम सांस लेते हुए मुझसे वचन लिया था कि मैं तुम्हें अग्निसमाधि से बचाऊंगा
राधा मर गई?
हां, तेरे दुष्कर्मों ने उसके प्राण ले लिए।...
और मुझे तुझे बचाने का अपराध करने के लिए विवश कर गई। अपने अपराध का पश्चाताप मैं स्वयं कर लूंगा।...
...तू चला जा यहां से और कहीं जाकर अपना नया जीवन आरम्भ कर...
पुत्र मोह में आपने जो अपराध किया है उसका पश्चाताप तो आपको करना ही होगा सुकर्मा जी परन्तु...

... आपके पुत्र ने जो जघन्य अपराध किये हैं उनका दण्ड भी उसको अवश्य ही मिलेगा।

म... महाबली! त... तुम यहां कैसे आ पहुंचे महाबली?

आपके इस यांत्रिक पुतले के हाथोंको समाप्त करने के बाद उसके द्वारा बनाई गई सुरंग के अंदर से होकर पहुंचना कठिन नहीं था।

अब आपकी भलाई इसी में है कि आप अपने पुत्र के साथ अपने-अपने हिस्से का दण्ड भुगतने मेरे साथ चलें।

म...मैं नहीं जाऊंगा।..

... मैं नहीं जाऊंगा!... म...मुझे बचा लीजिए पिताजी! मैं मरना नहीं चाहता! म... मैं एक नया जीवन शुरू करना चाहता हूं!...

...मुझे बचा लो पिताजी! मुझे बचा लो!

ये समय तेरे नये जीवन के आरम्भ का नहीं बल्कि तेरे जीवन की समाप्ति का है विश्वा, इसलिए उठ और चल मेरे साथ। तुझे अग्नि समाधि से कोई नहीं बचा...

...सकता! ओह!

मैं बचाऊंगा! मैं अपने पुत्र को बचाऊंगा!

उछलकर भोकाल से बेल की भांति लिपट गया सुकर्मा –

...तेजी से चीखा –

उस यांत्रिक पुतले में बैठ विश्वा और दाएं हाथ के पास उभरी हुई घुण्डी को दबा दे। उस घुण्डी के दबते ही वह पुतला हवा में उड़कर तुझे यहां से दूर ले जाएगा...

...और हां, इस पुतले में मेरे सारे चमत्कारी औजार भी रखे हैं। तू उनकी मदद से अपना नया जीवन भी आरम्भ कर सकता है।
जल्दी कर!
ओह विस्वा उस यांत्रिक पुतले में जा बैठा है। अब वह शीघ्र ही उड़कर यहां से चला जायेगा और मैं उसे रोकने के लिए आगे बढ़ नहीं सकता क्योंकि सुकर्मा जी मेरे शरीर से बुरी तरह लिपटे हुए हैं...
...मुझे ज्वालाशक्ति का प्रयोग करके यांत्रिक पुतले को नष्ट करना होगा।
भोकाल ने अपनी तलवार से ज्वालाशक्ति छोड़ी...
लेकिन वह उस यांत्रिक पुतले तक नहीं पहुंच पाई क्योंकि बीच में आ गया सुकर्मा -
सुकर्मा जी!
इधर भोकाल ने सुकर्मा के घायल शरीर को संभाला...
...और उधर विस्वा उस यांत्रिक पुतले में सवार हुआ और -
जूम्म्SS

यांत्रिक पुतला तूफान की सी गति से वहां से उड़ गया–

ओफ्फ! विश्वा भाग रहा है। लेकिन अब मैं उसे रोकने के लिए कुछ नहीं कर सकता क्योंकि...

...मुझे घायल मुकर्मा जी को लेकर तुरन्त ही आतुरालय पहुंचना है।

भोकाल मुकर्मा को लेकर तुरन्त ही आतुरालय पहुंचा तो लेकिन–

ये तो मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं।

ओह! अपने दुष्ट पुत्र को बचाने के लिए एक महान कारीगर ने अपने प्राण गंवा दिए।

इस हादसे ने भोकाल को दुख के सागर में डुबो दिया था–

लेकिन विश्वा के हलक से ठहाके उबल रहे थे-

हा हा हा! सृष्टि के निर्माता देवता विश्वकर्मा ने अपने ये दिव्य औजार मेरे पिता को देते समय सपने में भी नहीं सोचा होगा कि ये औजार कभी मुझ जैसे के हाथ लगेंगे और इन औजारों के बल पर तबाही बरपा होगी! हा हा हा!

पर्वत जो भव्यता के लिए जाना जाता है!

अड़िगता, अचलता के लिए पूजा जाता है!

लेकिन ये सब इस क्षण से पहले की किंवदंतियां हैं...

...इस क्षण तो विकासनगर का पवित्र रत्न गिरी पर्वत देखने वालों को डिगता भी दिख रहा है और...

... चलता हुआ भी-

ओह! नहीं! पवित्र रत्नगिरी पर्वत तो चलने लगा!

अद्भुत! अद्भुत! कैसे चल रहा है ये पर्वत?

ये बाद में सोचना पहले ये सोचो कि इससे जान कैसे बचाएं क्योंकि...

...तेजी से आगे बढ़ता यह पर्वत अपने सामने आने वाली हर चीज को नष्ट कर रहा है।
इसकी सूचना सुनते ही राजधानी पहुंचाओ क्योंकि अगर यह पर्वत राजधानी पहुंचने में सफल हो गया तो अनर्थ हो जाएगा।

सूचना जैसे ही राजधानी पहुंची वैसे ही उस पर्वत को रोकने के उपाय कर दिए गए...

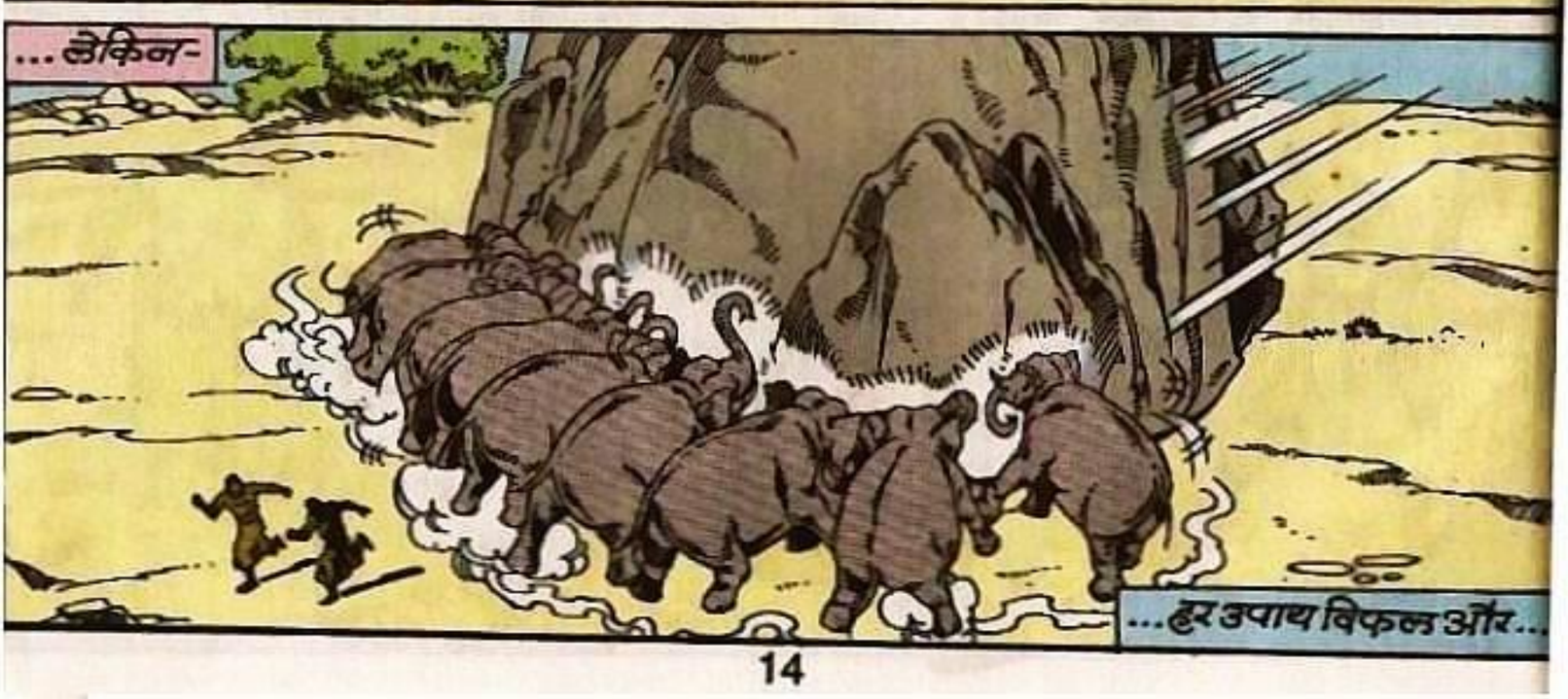
...लेकिन-
...हर उपाय विफल और...

...व्यर्थ साबित हो रहा था-

वह विशाल पर्वत हाथियों को कुचलकर हीरों के द्वार की तरफ बढ़ रहा है...

चिंघाड़SS

चिंघाड़SS

भागो। अब उसे हीरों के द्वार को नष्ट करके राजधानी में तबाही फैलाने से कोई नहीं रोक सकता।

विकासनगर की तरफ बढ़ने वाली यह प्रलय रुकेगी।...

...भोकाल रोकेगा इसे।

मैं इसे धकेलकर वापस इसके स्थान पर ले जाऊंगा।

अपनी शक्ति से पर्वत को पीछे हटाने की सोचता भोकाल ...

...खुद ही पीछे हट गया-

ओह! ये तो और भी अधिक शक्ति से आगे बढ़ने लगा। ऐसे मानों जैसे यह कोई जीवित प्राणी हो और शक्ति का उत्तर विपरीत शक्ति लगाकर दे रहा है।

कैसे हो रहा है ऐसा? यह जरूर कोई रहस्य है? और मैं इस रहस्य का अवश्य ही पता करूंगा। पहले इसे रोक तो दूं क्योंकि...

...इसे रोकने का एक रास्ता मेरे दिमाग में आ रहा है!...

...लेकिन उसके लिए मुझे गजमुक्ताधारी गजेन्द्र की सहायता लेनी होगी।

भोकाल ने अपना आशय तुरन्त ही पास खड़े सैनिक को समझा दिया-

गजशाला से गजेन्द्र को यहां लाओ। जल्दी।

कहानी 19 पेज से जा

गजेन्द्र को वहां पहुंचने में ज्यादा देर नहीं लगी-

तुम सही समय पर पहुंचे मित्र आओ मेरे साथ।

अब महाबली भोकाल को गजेन्द्र हाथी जैसे महाशक्तिशाली साथी का साथ मिल चुका था--

...जो उसके लिए ना अपनी योजना पर कार्य करना मुश्किल था...

शाबाश गजेन्द्र! शाबाश!

...और ना उसमें सफल हो जाना-

लोग दम साधे भोकाल और गजेन्द्र की शक्ति के उस बेमिसाल कारनामों को देख रहे थे...

...और लोगों की यह स्तब्धता तब तक उनके दिलो-दिमागों पर हावी रही जब तक भोकाल गजेन्द्र की सहायता से रत्नगिरी पर्वत को उसके स्थान तक खींचकर नहीं ले गया-

रत्नगिरी पर्वत अभी भी स्थिर नहीं है। अभी भी यह चलने को एकदम तैयार नजर आ रहा है!...

...क्यों...

कारण जानने के लिए मुझे अपनी प्रहारा शक्ति से रास्ता बनाकर...

...रत्नगिरी के नीचे पहुंचना होगा

ओह!

पर्वत के नीचे पहुंचते ही भोकाल को तेज झटका लगा।

रत्नगिरी पर्वत के नीचे सैकड़ों मजबूत पहिए लगे दिखाई दे रहे थे भोकाल को-

ओह! रत्नगिरी जैसा विशाल पर्वत पत्थरों से निर्मित इन छोटे-छोटे पहियों की मदद से चल रहा था!

रत्नगिरी को स्थिर करने के लिए मुझे इन पहियों को तोड़ना होगा!

रत्नगिरी को स्थिर करके...

भोकाल बाहर आया तो उसकी जयघोष से आसमान गूंज उठा-

महाबली भोकाल की जय

आपने हमें एक बहुत बड़े संकट से बचा लिया महाबली, इसलिए हम सबने निर्णय लिया है कि इस अवसर को यादगार रखने के लिए हम आपकी एक विशाल प्रतिमा यहां स्थापित करेंगे।

लेकिन एकाएक रत्नगिरी पर्वत चल क्यों पड़ा?...

...क्या ये कोई दैवीय विपदा थी?

नहीं। रत्नगिरी के तल को काटकर उसमें पहिये लगाए गए थे। और ऐसा निश्चय ही किसी शत्रु सेना की सैनिक टुकड़ी ने किया है...

...और वह शत्रु राज्य कौन सा था मैं इसका पता लगाकर उसे दण्ड देकर ही रहूंगा।

विशाल पर्वत को चलाने के कार्य को शत्रु सैनिक की टुकड़ी का काम समझता भोकाल

...क्या जानता था कि वह काम एक अकेले ही आदमी ने किया था।

और वह अकेला आदमी था—

विश्वा—

रत्नगिरी को पुनः अपने स्थान पर स्थापित करके अगर तू यह समझ रहा है भोकाल कि तूने विकासनगर को प्रलय से बचा लिया तो ऐसा सोचना तेरी भूल है। ये तो मात्र आरम्भ है और...

...जब आरम्भ इतना भयंकर है तो सोच अन्त कितना भयानक होगा!...

...और उस अंत को आने से तू नहीं रोक सकता क्योंकि...

...इन चमत्कारी औजारों के बल पर विश्वा हर असंभव कार्य को चुटकी में सम्भव कर सकता है।

विश्वा के चेहरे पर तांडव करता क्रोध बता रहा था कि जल्दी ही एक बड़ी मुसीबत का सामना करने वाले थे...

...विकासनगरवासी-
इस शुभ अवसर पर महाबली कहां गए?
वे एक बेहद आवश्यक मंत्रणा में सम्मिलित होने के लिए हमारे मित्र राज्य उदयगिरी गए हुए हैं। शीघ्र ही लौट आएंगे। आइये हम अनावरण कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हैं।
ये दो बैलगाड़ी भर फूल किस लिए मंगाए गए हैं?
पुष्पवर्षा करने के लिए।
लो महारानी जी महाबली की प्रतिमा को अनवरित करने के लिए चल दीं, पुष्पवर्षा के लिए तैयार रहो।
महारानी ने भोकाल की प्रतिमा के आवरण को हटाया-
लेकिन महारानी के ऐसा करने के पश्चात...
...पुष्पों की नहीं चीखों की वर्षा हुई।
आहहSSS
आहहSSS
और वे चीखें हर उस विकासनगर वासी के मुख से निकली थीं...

...जिन्होंने भोकाल की प्रतिमा को चलते और झपटकर रानी मोहिनी को दबोचते...

आहह

...और फिर उसे कई हाथ ऊपर हवा में उछालते देखा था—

आहह

अब आश्चर्य से फटी उन आंखों को रानी मोहिनी के चिथड़ों को जमीन पर भी बिखरे देखना था क्योंकि...

आहह

...इतने ऊपर से नीचे आता रानी मोहिनी का शरीर कठोर जमीन से टकराकर पके आम की तरह फूटने वाला था—

लेकिन देखने वालों को रानी मोहिनी जमीन पर नहीं उस गाड़ी में भरे फूलों पर गिरती दिखी—

और फिर उन्हें दिखा--
महाबली आ गए!
भोकाल
ओफ्फ! उदयगिरी से यहां के लिए रवाना होने में अगर मैंने एक क्षण भी गंवा दिया होता तो महारानी को नहीं बचा पाता!
लेकिन ये एकाएक हुआ कैसे? यानी वह प्रतिमा चल कैसे रही जो पूरी तरह पत्थर की बनी हुई है।...
...ओह, वह तो भयंकर तोड़-फोड़ मचा रही है।
...ऐसे में कोई प्रजावासी उसका शिकार बन सकता है, इसलिए मुझे प्रजा को उसके प्रकोप से बचाने के लिए उनसे कहना ही होगा।...
...भाग जाओ यहां से।...
...सभी इस क्षेत्र को खाली कर दो।

तुरन्त ही भीड़ काई की तरह छंटने लगी-

अब ठीक है। अब मेरे पास अवसर है कि मैं अपने वारों से...

... इस प्रतिमा के सिर को...

... इसके शरीर से अलग कर दूं!

आऊ!

वार जोरदार था-

भोकाल को ऐसा लगा जैसे उसकी आंखों के सामने स्याह पर्दा पड़ गया हो।

और अभी भोकाल की आंखों के सामने से वह कालिख का पर्दा हट पाता...

...उससे पहले ही भोकाल को उस मूर्ति ने दबोच लिया-

पीड़ा ने तुरन्त ही भोकाल का वास्तविकता से परिचय करवा

ओक्का! प्रतिमा के हाथ पूरी शक्ति से मुझे जमीन से दबा रहे हैं।...

...अगर मैं शीघ्र ही इसके हाथों के नीचे से नहीं निकला तो...

...यह मुझे ठीक वैसे ही फोड़ डालेगा जैसे बच्चा संतरे को अपने हाथों में दबाकर फोड़ता है!...

...ओह नहीं! प्रहारा की शक्तियों से बने गदा के प्रहार से उसका बाल भी बांका नहीं हुआ...

...मुझे प्रहारा से क्रुद्ध और बनाकर इसे नष्ट करना होगा!

भोकाल इस बार प्रयोग कर पाता उससे पहले ही प्रहारा उसके मस्तक से छिटक गया-

ओक्फ! इसके वार से प्रहारा उछलकर दूर जा गिरा है। तो मुझे अपने एक हाथ से इसे कूटने लगा जैसे लुहार लोहे को कूटता है।

ये मुझे कूट-कूटकर मार डालेगा!...

मुझे अपनी शक्ति के प्रत्येक कतरे का प्रयोग करके इसे अपने से अलग करना होगा।
अब इसकी खैर नहीं।
टनाक
भोकाल की चमत्कारी तलवार का जोरदार वार उस मूर्ति पर हल्का सा निशान डालने के सिवा कुछ नहीं कर सका।

कि मूर्ति के हल्के से वार ने एक बार फिर भोकाल
प्रत्येक अंग को पीड़ा से भर दिया-
ओफ्फ! तलवार भी मेरे हाथों से छूट चुकी है। अब तो मेरे पास...
...मात्र यह ढाल बची है इससे चाहे मैं वार कर लूं या वार बचा लूं।...
...वार बचाना ही लाभदायक होगा क्योंकि...
ठक
...ढाल के
र से तो इसके
रीले शरीर पर खरोंच
भी नहीं पड़ने वाली!
ओफ्फ!
ल ने भी ज्यादा देर भोकाल का साथ नहीं दिया-
अब भोकाल को कुछ सोचना ही था-
इसे समाप्त करने के लिए अगर मैंने कुछ नहीं किया तो यह मुझे समाप्त कर देगा...
...और फिर समाप्त करेगा पूरे विकासनगर को!...

...नहीं। मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। मुझे उसे खत्म करना होगा और ऐसा करने के लिए मुझे अपनी ज्वालाशक्ति का प्रयोग करना होगा!...

...लेकिन ज्वालाशक्ति का प्रयोग तो मैं तभी कर सकता हूं ना जब मेरी तलवार मेरे हाथ में हो।

लेकिन मैं अपनी तलवार उठाऊं तो कैसे? ये शैतान प्रतिमा तो मुझे इतना समय ही नहीं दे रही कि मैं अपनी तलवार तक पहुंच सकूं!...

...तलवार उठाने का समय पाने के लिए मुझे कुछ करना होगा।

...और उसमें ये घी के भरे पात्र शायद मेरी कुछ मदद कर सकें।

भोकाल ने घी से भरे दो पात्रों को जमीन पर लुढ़का दिया-

सुखद परिणाम तुरन्त ही सामने आया-

घी की चिकनाहट पर जैसे ही मूर्ति के पांव पड़े वैसे ही-

शिय्यूऽऽ

विशालमूर्ति फिसलकर नीचे आ

शीघ्र ही कई टुकड़ों में बंटकर निश्चल हो गई थी वह प्रतिमा-

लेकिन निश्चल स्थिति में वह मूर्ति एक ही पल रही-

एक पल बाद ही...

...तबाही मचाने में जुट गयी-

धड़ाक

धड़ाक

ओह! नहीं इसका तो हर अंग एक विनाशक रूप धारण कर चुका है!

बचाओ!

मूर्ति का हर अंग भयानक ढंग से उछला औ

...सभी को...
...अतिशीघ्र...
...समाप्त... करना...
...होगा।..
उस मूर्ति के हर अंग को नष्ट करके
मूर्ति की सारी वास्तविकता उसके
थी-
यंत्र! तो मेरी प्रतिमा यंत्रों की सहायता से चलाया गया था ताकि विकासनगर में तबाही फैला दे।...
...ठीक ही जैसे गिरीपर्वत को चलाया गया।...
कौन कर रहा है ऐसा?
...कौन है, जो अपने यांत्रिक ज्ञान से विकासनगर के भविष्य से खिलवाड़ कर रहा है!
भोकाल ने अपने मस्तिष्क पर जोर डाला तो...

...उसकी जुबान पर वह नाम आ ही गया-

विस्वा! यह काम विस्वा के सिवा और किसी का नहीं हो सकता क्योंकि उसके पास ही उसके स्वर्गीय पिता के वे औजार हैं, जो किसी भी निर्जीव वस्तु में यांत्रिकी लगाकर उसे सजीव जैसा बना सकते हैं।

और ऐसा विस्वा इसलिए कर रहा है क्योंकि वह अपने प्रतिशोध के रूप में विकासनगर को तबाह कर देना चाहता है।...

...मुझे शीघ्र ही उसे ढूंढना होगा क्योंकि वह दो ही स्थिति में चुप बैठ सक है या तो वह अपना प्रतिशोध पूरा क ले...

...या फिर कारागार की काल कोठरी में पहुंच जाए।

भोकाल का सोचना सही था--

लेकिन विस्वा अभी उन दोनों स्थितियों से दूर था-

मैंने भोकाल के पुतले को यह ध्यान में रखकर बनाया था कि भोकाल का प्रहार उसकी तलवार और उसकी ताकत उसको समाप्त न कर पाए...

...लेकिन मैं उसकी ज्वालाशक्ति भूल गया था। मेरी यही भूल मेरे एक अद्भुत हथियार के नाश का कारण बनी।...

लेकिन मेरे उस हथियार नष्ट होने का यह अर्थ नहीं है कि ... का भी नाश हो गया है। ... पूरा होना ही है।...
... इस बार थोड़ी ऐसी ... की आवश्यकता है कि ... की ज्वालाशक्ति भी बेकार सिद्ध हो।...
और ऐसी तैयारी ... के लिए मुझे ज्यादा दूर नहीं जाना होगा।...
...इस सुप्त ज्वालामुखी में मुझे अपनी तैयारी का सामान मिल जाएगा।...
...क्योंकि यहां मौजूद हैं वे असंख्य पत्थर जो भीषण तरीके से दहकते लावे के बीच सैकड़ों वर्षों तक सही सलामत पड़े रहते हैं।
इधर विख्वा विकासनगर में एक नया तबाही का दल पहुंचाने की तैयारी में था–
... इधर भोकाल विख्वा तक पहुंचने की तैयारी कर रहा था–
विख्वा ... था?... वह कैसे ... बना और उसकी ... क्या है?... मुझे ... जानकारी चाहिए सेनापति जी!
हमारे पास विख्वा का सारा इतिहास है महाबली...
...तुम बैठो मैं वह सारा इतिहास तुम्हें उपलब्ध करवाता हूं।
महाबली! महाबली!

...पश्चिम दिशा से एक बहुत ही भयानक संकट राज्य पर आ टूटा है महाबली!
राज्य की पश्चिमी दिशा!...
...मुझे तुरन्त ही वहां पहुंचना होगा!
पश्चिमी दिशा से राज्य की तरफ बढ़ने वाला वह संकट सि
भयानक ही नहीं...
...भयानक से भी ज्यादा भयानक था-
शर्रक
उसकी हर सांस प्रलय की द्योतक थी-

सका हर कदम विनाश का सूचक था-
कर्रईई
आहऽऽ
गरजना आकाश के कलेजे
रहा था-
चिंघाऽऽऽऽ
...उसका मचलना धरा के सीने को चीर रहा था।

जिधर भी वह घूम जाता था उधर ही त्राहि-त्राहि मच जाती थी–
लेकिन अब शायद उसकी तबाही का अन्त समय आ गया था क्योंकि वहां आ पहुंचा था...
...महाबली भोकाल–
बहुत हुआ दुष्ट यांत्रिक प्राणी...
अब भोकाल तेरे साथ-साथ तेरे प्रकोप को भी समाप्त करेगा!
ओह! तलवार के वार ने इसके शरीर पर जरा भी प्रभाव नहीं डाला!...
...मैं जानता था ऐसा ही होगा!

...तभी तो मैंने पहले से ही सोचा हुआ है कि मैं अपने प्रहारों से एक ऐसा जबड़ा बनाऊंगा...

...जिसका दबाव इस भयंकर प्राणी को पीसकर रख देगा।

प्रहारा से बने उस बड़े जबड़े ने उस भयंकर प्राणी को अच्छी तरह अपने शिकंजे में फंसाया--

मात्र कुछ क्षणों के लिए। कुछ क्षणों बाद ही-

ओह नहीं! उसने अपनी शक्ति से प्रहारा के जबड़े को तोड़ डाला...

...मुझे इसे दुबारा फंसाना होगा।

इस बार भोकाल की सोच को प्रहास ने बेहद मोटी जंजीर का रूप दिया था।

लेकिन वे जंजीरें भी कुछ पलों से ज्यादा की मेहमान नहीं रहीं-

ओफ्फ! प्रहास का यह प्रहार भी उस पर बेकार सिद्ध हुआ यानी अब मेरे पास मात्र यही रास्ता रह गया है कि मैं इसे समाप्त करने के लिए...

...अपनी तलवार में समाई ज्वालाशक्ति का प्रयोग करूं।

ओह! नहीं!

...इस संसार की हर वस्तु और धातु को पिघला देने वाली मेरी ज्वालाशक्ति उसके शरीर से टकराकर ऐसे बेकार हो रही है।...

प्राणी जैसा
मेरे वारों ने
भड़का दिया
पहले से अधिक
आ गई है।
इसे तुरन्त ही समाप्त नहीं किया गया तो...
... ये मुझे तो मार ही डालेगा साथ ही...
... पूरे विकासनगर को भी तबाह कर डालेगा।...
... और अब इसे समाप्त करने का एक ही तरीका है। परन्तु उस तरीके पर कार्य करने में मेरी उस दानव के हाथों मृत्यु भी हो सकती है।

लेकिन विकासनगर की रक्षा के लिए मुझे अपने जीवन को दांव पर लगाना ही होगा।

अपनी जान पर खेलकर भीकालु उस भयानक प्राणी के नीचे पहुंचा और

...अपनी समस्त शक्ति का उपयोग करके उसे ले उड़ा-

मेरा इरादा इसे लेकर आकाश में चक्कर काटने का नहीं है बल्कि मैं इसे यहां लेकर इसलिए आया हूं...

...ताकि मैं इसे अधिक से अधिक ऊंचाई पर ले जाऊं...

...और वहां
टकराकर...
...खील-खील होकर बिखर जाए।
को
उस तरीके की
पर पूर्ण विश्वास था-
लेकिन जब उस प्राणी का शरीर धरा से टकराया तो उसका वह विश्वास खील-खील होकर रह गया-
ओह नहीं! ऊंचाई से गिरने के बाद भी उसका बाल भी बांका नहीं हुआ! ओफ्फ!
धड़ाक
लेकिन मुझे इस विफलता से हार कर नहीं बैठ जाना है। मुझे अपना यह प्रयत्न तब तक जारी रखना होगा जब तक यह शैतान समाप्त नहीं हो...
...जाता!
ओह!
लेकिन इस बार भोकाल उस प्राणी की पूंछ की चपेट में आ गया...

...और अब वह संभलता उससे पहले ही-

ओफ्फ! इस भयंकर प्राणी ने मुझे अपने जबड़ों में जकड़ लिया। मैं इसके जबड़ों की ताकत देख चुका हूं।...

...अगर मैं शीघ्र ही इसके जबड़ों से बाहर नहीं निकला तो...

...यह मुझे लड्डू की भांति चबा जाएगा!

लेकिन ऐसा होगा कैसे? ये जबड़े तो इतनी अधिक शक्ति से एक-दूसरे की तरफ बढ़ रहे हैं कि मेरा सारा बल इनके सामने व्यर्थ सिद्ध हो रहा है।...

...तो क्या मैं इसके जबड़े से बाहर नहीं निकल पाऊंगा।...

...तो क्या यह यांत्रिक जबड़ा मुझे चबाकर अप पेट में पहुंचा देगा

अरे!...

...मैं भी कितना मूर्ख हूं। मैं इसके जबड़े से बचकर बाह जाने की क्यों सोच रहा हूं जबकि इस भयंकर समस्य का हल बाहर नहीं...

...इसके पेट के अंदर मौजूद है...

वहां

...जहां इसको चलाने वाली यांत्रिकी मौजूद है!...

...अब मुझे यहां ज्यादा कुछ नहीं करना अपने आपको इस यांत्रिकी की चपेट में आने से बचाए रखना है...

...और जो भी वस्तु सामने है उसे समाप्त करना है!...

...और यह पक्का है कि अंदर मौजूद इस यांत्रिकी पर मेरी ज्वालाशक्ति खूब काम करेगी!...

...क्योंकि इसके निर्माता ने यह सपने में भी नहीं सोचा होगा कि कोई इस यांत्रिक दानव के अंदर घुसकर इन यंत्रों को नष्ट करने की भी सोच सकता है।

अंदर जैसे-जैसे ओकाल यंत्रों को नष्ट कर रहा था...

...बाहर वैसे-वैसे उस भयंकर प्राणी पर उसका प्रभाव पड़ रहा था।

शीघ्र ही वह क्षण भी आया जब वह प्राणी शराबी की भांति झूमा और-

धड़ाम से नीचे गिर पड़ा-

ओकाल तुरन्त ही बाहर आया-

इस भयंकर प्राणी को समाप्त करके मैंने विकासनगर से एक बड़े संक को तो टाल दिया लेकिन श ही इससे बड़ा कोई संकट वि विकासनगर में आतंक मचा आ जाएगा और हो सकता इस बार मैं उसे समाप्त कर सफल ना हो पाऊं। इसलि

... जिसके सामने भोकाल की समस्त शक्ति के साथ-साथ उसकी बुद्धि भी नतमस्तक हो जाए। अरे...
...ये... ये घण्टा क्यों बजा?...
टिरींsss
...इसके बजने का तो एक ही अर्थ मेरे इस गुप्त ठिकाने तरफ आने के प्रय है लेकिन...
कौ
...भोकाल!
...ये तो भोकाल है।
अचानक विख्वा की आंखें हीरे की त चमकने लगीं-
अब मुझे भोकाल को म के लिए कोई तैय करने की आवश नहीं है। वह खुद आ गया यहां। जीवित बचकर जा पाएगा।

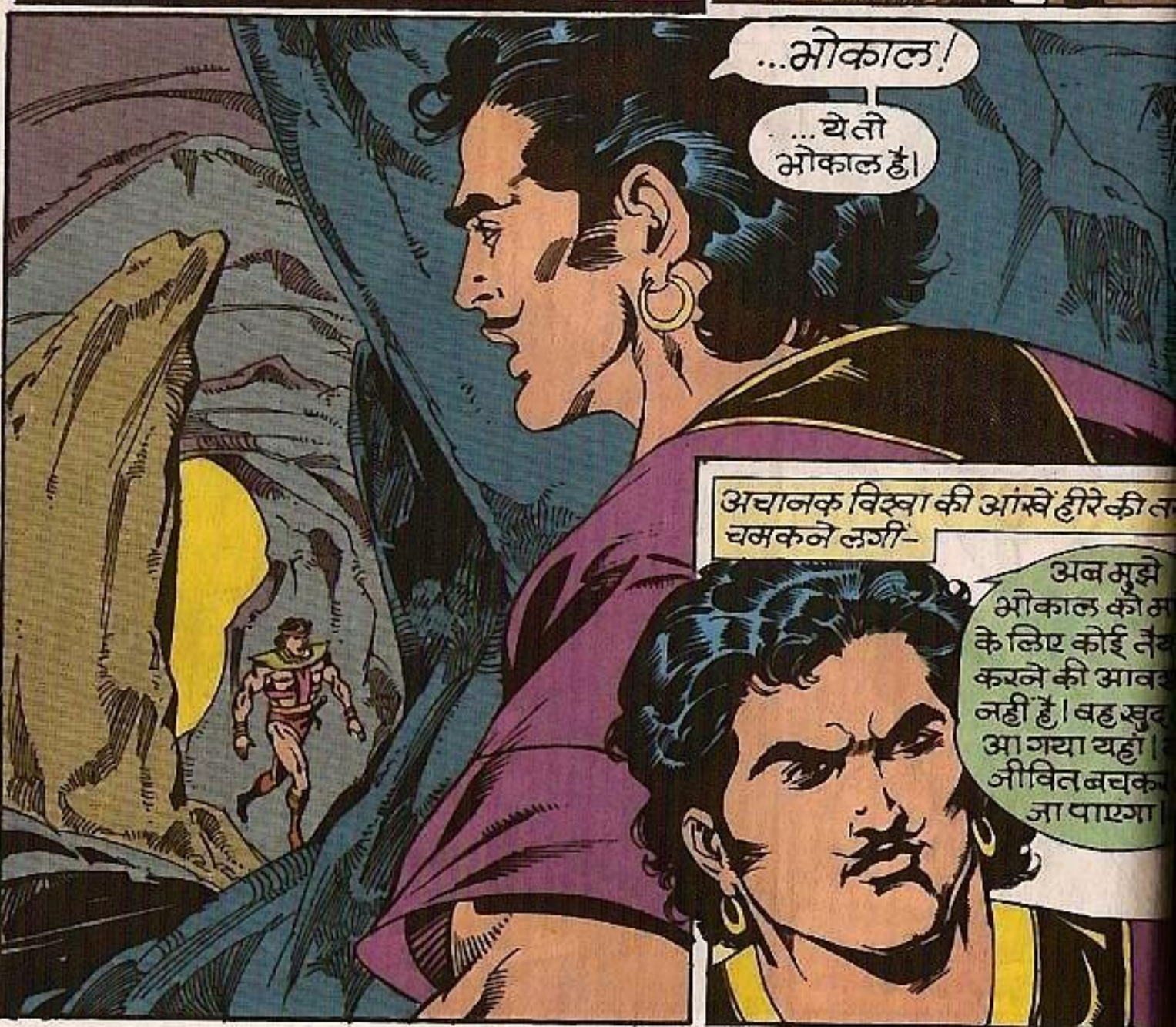

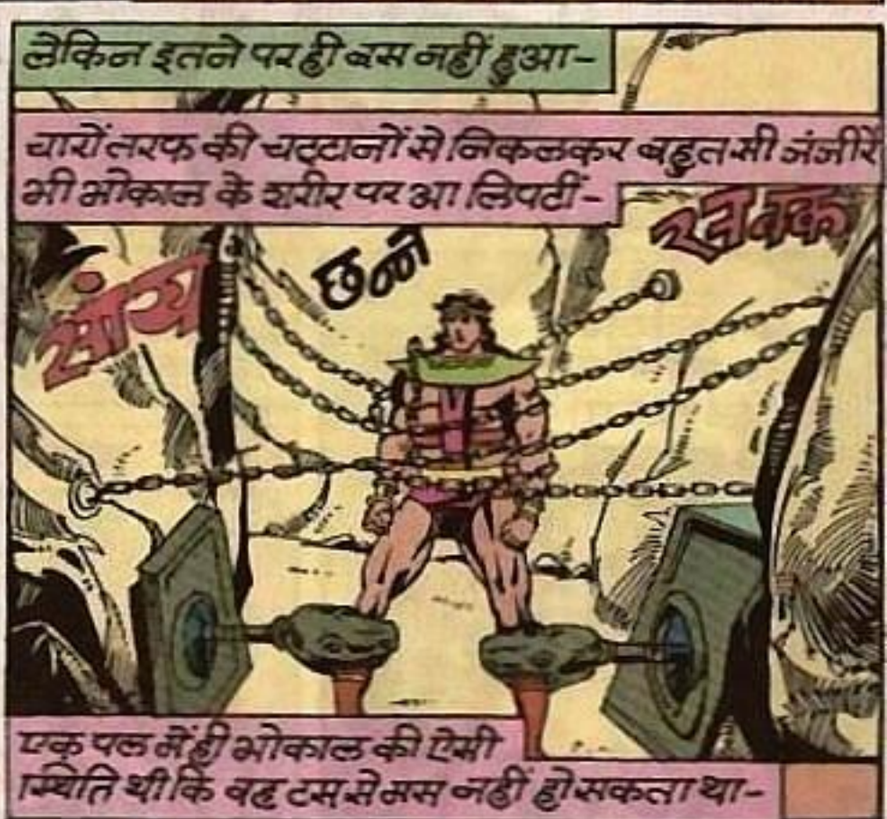

भोकाल के कदम जैसे ही उस दर्रे में पड़े...
लेकिन इतने पर ही बस नहीं हुआ-
चारों तरफ की चट्टानों से निकलकर बहुत सी जंजीरें भी भोकाल के शरीर पर आ लिपटीं-
छन्न
खटाक
दो भयानक
भोकाल के कदमों को जकड़ लिया।
एक पल में ही भोकाल की ऐसी स्थिति थी कि वह टस से मस नहीं हो सकता था-
ठहाका लगाया विश्वा ने-
हा हा हा! भोकाल मुझ तक पहुंचने का तेरा सपना अब धरा रह जाएगा जिस शिकंजे में तू फंसा हुआ है, उसे मौत का शिकंजा कहते हैं और ऐसा इसलिए क्योंकि...

...उस शिकंजे में फंसने वाले पर मौत तुरन्त ही झपट पड़ती है।...
...इन चकरियों के रूप में जो मजबूत से मजबूत फौलाद को मक्खन की तरह काटकर गुजर जाती हैं।...
...और तू इन घातक चकरियों से नहीं बच सकता।-
चकरsss
चकरsss
...क्योंकि उस शिकंजे में तू तिल भर भी नहीं हिल सकता।
भोकाल ने छटपटा कर स्वयं को उन चकरियों से बचाने का प्रयत्न तो किया--
लेकिन...
...भोकाल का हर प्रयत्न उसके साथ ही खत्म हो गया-
घातक चकरियां भोकाल के शरीर को कई टुकड़ों में बाटकर गुजर गईं-
खचाक
खटाक

ी के साथ वहां के वातावरण में गूंज उठे
वा के बुलंद ठहाके –
हा हा हा! समाप्त! विश्व का सबसे बड़ा महाबली काल समाप्त हो गया, वो भी तनी आसानी से जितनी आसानी से मक्खी समाप्त होती है।
अब विस्वा इतनी ही आसानी से विकासनगर को समाप्त करेगा।
हा हा हा!
भोकाल इतनी आसानी से समाप्त होने वाला नहीं है, ये बात अगर तूने जरा भी सोच ली होती तो...
...तो तुझे आराम से दिख जाता क तेरी चकरियों ने जिसके ड़े किए हैं वह कोई इंसानी र नहीं बल्कि एक ऐसा ांत्रिक पुतला है, जो भोकाल की यानी मेरी वेषभूषा में है...
...और तुझे तेरे ही तरीके से धोखा देने वाला यह यांत्रिक पुतला कभी तेरे पिता श्री मुकर्मा ने ही मुझे भेंट किया था।...
...आज उसका सही इस्तेमाल हुआ है।...
...तू उसमें उलझा और मैं तेरे सिर पर पहुंच गया।
ओह!
धोखा तो तूने मुझे खूब दिया भोकाल, लेकिन अफसोस तू मुझे यहां मात करने में सफल नहीं हो पाएगा।

यहां तो सफलता सिर्फ और सिर्फ मेरे हाथों लगेगी।

वह भाग रहा है मुझे उसे रोकना होगा वरना वह मेरे हाथ नहीं आने वाला।

भोकाल विश्वा के पीछे भा

लेकिन उस समय ठिठककर रह गया जब ऊपर से गिरे द्रव से उसका शरीर पूरी तरह भीग गया-

ओफ्फ! यह क्या?

खैर। कुछ भी हो लेकिन यह मुझे विश्वा को पकड़ने से नहीं रोक सकता।

एक पल बाद ही-

वह रहा। अब वह मेरे हाथों से नहीं बच सकता।

भोकाल ने उसे दबोचने के लिए छलांग लगाई..

और इसी के साथ वह स्तब्ध रह गया–
ओह! ये क्या हो रहा है! मेरा शरीर विस्वा की तरफ जाने की बजाये उस नुकीली चट्टान की तरफ क्यों खिंच...
...रहा है? ओफ्फ!
भोकाल तेजी से उस चट्टान से आ टकराया–
र–
ओह नहीं! मेरा रीर तो इस बड़ी चट्टान बुरी तरह, चिपककर रह गया ?...
...कैसे हुआ ऐसा? कहीं इस चट्टान में कोई ऐसी पैशाचिक शक्ति तो नहीं जिसने मुझे जकड़ लिया है?
ये पैशाचिक नहीं यांत्रिक शक्ति का कमाल है भोकाल! इस चट्टान में चुम्बकीय प्रभाव दौड़ रहा है। और यह चट्टान तुझे खींचकर अपने से इसलिए चिपटाये हुए है, क्योंकि तेरे शरीर पर अभी-अभी जो द्रव गिरा था उसमें लौह तत्व है।
...अब जब तक लौह तत्व तेरे शरीर से नहीं हट जाते तू इस चट्टान से नहीं छूट पायेगा और ये लौह तत्व अब तभी छूटेगा जब तेरे शरीर से तेरे प्राण छूटेंगे।
विस्वा ने वह यांत्रिक चट्टान तेजी से आगे बढ़ा दी...

...इसी के साथ उस चट्टान के आगे लगी तलवारें पवनचक्की की भांति घूमने लगीं–

हा हा हा!

हा हा हा! अब तेरे शरीर के इतने टुकड़े होंगे भोकाल की तेरे चाहने वाले जिन्हें सात जन्म तक भी इकट्ठा नहीं कर पाएंगे।

ओफ्फ! वह तेजी से मेरी तरफ बढ़ता आ रहा है। प्रहारा की शक्तियां उसे रोक नहीं पा रही हैं...

... और इस चट्टान में उपास्थित चुम्बकीय प्रवाह मुझे छोड़ नहीं रहा है।...

... ऐसे तो वह सचमुच मुझे हजारों टुकड़ों में बांटने में सफल हो जाएगा।

... नहीं, ऐसा नहीं होगा।

... मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।

अचानक एक दूसरे पर भिंचने वाले भोकाल के जबड़े बता रहे थे कि ऐसी दशा में भी उसके साहस ने उसका साथ नहीं छोड़ा था।

एकाएक पिचकने-फूलने लगीं भोकाल के शरीर की समस्त नसें इस बात की गवाही दे रही थीं कि अभी उसका शरीर और आत्मबल उसके साथ था–

और जिस मनुष्य के साथ उसका साहस, शक्ति और आत्मबल होता है...

... वह अपने उद्देश्य में अवश्य सफल होता है और...

..हालात का पासा पलटना खूब जानता है-

ओह!

धड़ाक

याSSS

भोकाल की उस भीषण टक्कर ने विश्वा को उसकी यांत्रिक चट्टान के साथ उधर उछाल दिया...

..जहां मौत के दावानल के रूप में मौजूद था खौलता हुआ लावा--

आहSSS

छपाक

और वह खौलता लावा यांत्रिक चट्टान के बाद विश्वा को भी लीलने वाला था--

लेकिन ऐसा हो पाता...

... उससे पहले ही उस हाथ ने उसकी मृत्यु को जिन्दगी में बदल दिया--

और विश्वाको मौत से बचाने वाला वह हाथ...

...उस शरीर के मस्तक पर रखे प्रहार से निकला था जिसे विश्वा खत्म करना चाहता था और वह शरीर भोकाल का था-

तू विकासनगर का अपराधी है विश्वा, इसलिए तेरी मृत्यु पर विकासनगर की न्यायप्रणाली का अधिकार...

...है ओफ्फ!

विश्वा को कोई न्यायप्रणाली दण्ड नहीं दे सकती!...

...विश्वा किसी के हाथ नहीं आएगा!

ओफ्फ! मुझको धक्का देकर विश्वा एक बार फिर यहां से भाग खड़ा हुआ है! और इस बार भी मैं उसे नहीं रोक सकता क्योंकि...

...अपने शरीर से चिपकी इस भारी चट्टान को लेकर!

...मैं उसके पीछे नहीं भाग सकता।...
...मुझे इससे छूटने में देर लगेगी।...
...जब मैं बाहर मौजूद पानी के तालाब तक इसे खींचकर ले जाऊंगा और वहां पानी में अपने शरीर पर मौजूद लौह तत्वों को धो डालूंगा।
काल जल्दी ही उस चट्टान से आजाद हुआ--
अब मेरे लिए हां कुछ नहीं रखा। मे वापस लौट जाना हिए क्योंकि अब तक खा पता नहीं कहां का कहां पहुंच गया होगा।
पता नहीं अब वह अपने दिव्य आजारों से कौन से नए कारनामें को अंजाम देगा?

विश्वा का नया कारनामा जल्दी ही विकासनगर वासियों के सामने आ गया-

किसी ने विशाल रत्नगिरी पर्वत को काटकर उसे महाबली भोकाल की प्रतिमा का रूप दे दिया है।

अद्भुत

इस अद्भुत कार्य को तो एक ही आदमी कर सकता है और वह आदमी विश्वा है।

किसने किया ऐसा?

आपने सही कहा भोकाल...

...रत्नगिरी पर्वत को मैंने ही आपका रूप दिया है और क्षमा करके मैंने एक तुच्छ सी भेंट दी है। आपने मुझे खौलते लावे में गिरने से बचाकर यह समझा दिया है कि मनुष्य के जीवन का मूल्य क्या होता है।...

...आपको छोड़कर भाग जाने के पश्चात मेरी अंतरात्मा ने मुझे धिक्कारना आरम्भ कर दिया।

थूहें मेरे जीवन पर जो हमेशा मनुष्य के प्राणों से खिलौने की भांति खेलता हुआ आया। मैं अपने पिता के इन चमत्कारी औजारों को आपके चरणों में रखकर अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहता हूं।

ईश्वर ने तुम्हें सद्‌बुद्धि दे दी, यह बहुत अच्छा हुआ विश्वा। इससे प्रसन्न होकर हम तुम्हारे मृत्युदण्ड को आजीवन कारावास में बदलते हैं।

समाप्त....

RAJ COMICS FAN NATION

BRINGING THE JANOON BACK

Like it?..Buy it..save the industry....

RKO SCANS

FIND MORE AT:- http://www.rkoscans.co.nr/